International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गाँधीजी की दृष्टि में आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत

डॉ. प्रभाकर, अतिथि सहायक प्राध्यापक,
बी0 एन0 एम0 भी0 कॉलेज, मधेपुरा।

आजादी के बाद गांधीजी भारत के सर्वतोमुखी एवं सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे ताकि देष आधुनिक और आत्मनिर्भर बन सके। गाँधीजी की दृष्टि में भारत का नवनिर्माण तभी संभव है, जब देष में समस्त प्रकार के संतुलित और समग्र विकास हो। चाहे वे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, षैक्षणिक, सांस्कृतिक विकास हो या अन्य तरह के विकास ।

गाँधीजी ने कहा ''मैं केवल आषा लगाए हूँ और प्रार्थना कर रहा हूँ .... कि एक नये और स्वस्थ्य भारत का उदय होगा, जो पष्चिम की सभी वीभत्स बातों की घटिया नकल करनेवाला एक युद्धप्रिय राष्ट्र नहीं होगा, अपितु ऐसा नया भारत होगा जो पष्चिम की उत्कृष्ट बातों को सीखेगा और केवल एषिया तथा अफ्रीका ही नहीं बल्कि सारे दुनिया के लिये आषा का किरण बनेगा।''[1]

गाँधीजी ने कहा कि –'' मैं भारत का उत्थान चाहता हूँ ताकि सारी दुनिया उससे लाभान्वित हो सके। मैं यह नहीं चाहता कि भारत का निर्माण किन्ही अन्य राष्ट्रों के ध्वसांवषेष के उपर हो। इसलिये यदि भारत सुदृढ़ और योग्य बना तो वह सारी दुनिया को अपनी कलाकृतियों और स्वास्थ्यवर्धक मसालों का निर्यात करेगा, किन्तु अफीम या मादक द्रव्यों का निर्यात करने से इंकार कर देगा, भले ही इससे उसे प्रचुर धन की प्राप्ति हो।''[2]

गाँधीजी ने कहा–''भारत ऐसा स्वर्ग होगा जहाँ न कोई कंगाल होगा– न भिखारी , न ऊँच– न नीच, न लखपति–न अधभूखा कर्मचारी , न मादक पेय– न नषीली दवाईयाँ। जो सम्मान पुरूषों को प्राप्त होगा, वही स्त्रियों को भी दिया जायेगा। स्त्री–पुरूषों की पवित्रता और षुद्धता की सावधानीपूर्वक रक्षा की जायेगी, छूआछूत का नामोनिषान नहीं होगा। सभी धर्मो को समान आदर की दृष्टि से देखा जायेगा। सभी लोग रोटी कमाने के लिये प्रसन्नतापूर्वक और स्वेच्छा से श्रम करने में गौरव अनुभव करेंगे।''[3] मैं भारत को स्वतंत्र और सुदृढ़ देखना चाहता हूँ ताकि वह दुनिया के खुषहाली के लिये स्वयं को प्रस्तुत कर सके। [4]

भारत को एक आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिये गाँधीजी ने निम्न बातों पर बल दिया –

1. सक्षम और सुदृढ़ भारत
2. स्वच्छ भारत
3. स्वस्थ भारत
4. सषक्त नारी
5. सतत कृषि और पर्यावरणीय सुरक्षा
6. ग्राम स्वराज्य
7. सर्वधर्म समभाव
8. बसुधैव कुटुम्बकम्ब

1. **सक्षम और सुदृढ़ भारत**– गाँधी ने कहा–''भारत की हर चीज मुझे आर्कर्षित करती है। इसके पास वह सब कुछ है, जो किसी मानव को अपनी उच्चतम आकांक्षाओं की प्राप्ति के लिये अपेक्षित प्रतीत हो सकता है।''[5] उन्होंने कहा–''मेरा राष्ट्रप्रेम अनन्य नहीं

है, इसमें न केवल, किसी राष्ट्र को हानि न पहुँचाने की बात है, बल्कि सच्चे अर्थों में सभी का हित करना भी 'षामिल है। भारत की स्वतंत्रता की मेरी जो अवधारणा है, उसके अनुसार ''वह दुनिया को कष्ट देने वाला कभी सिद्ध न होगा। ''[6] मैं पूरी विनम्रता के साथ यह स्वीकार करता हूँ कि हम पष्चिम की बहुत सी बातों को आत्मसात करके लाभान्वित हो सकते हैं। बुद्धिमता किसी एक महाद्वीप अथवा प्रजाति की बपौती नहीं है। पष्चिमी सभ्यता के प्रति मेरा विरोध वस्तुतः उसके अंधाधुंध और विवेकहीन अनुषरण के प्रति है, जो इस धारणा पर आधारित है कि एषियावासीयों में पष्चिम से आनेवाली हर चीज की नकल करने भर की योग्यता है।''[7]

2. **स्वच्छ भारत** – गाँधीजी ने आजादी से ज्यादा महत्वपूर्ण 'स्वच्छता' को माना। उन्होंने महसूस किया कि सफाई का राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उन्होंने कहा ''स्वच्छता का स्थान ईष्वर के करीब है।''[8]

गाँधीजी ने कहा – ''एक राष्ट्र के रूप में वैष्विक एवं स्वच्छ बनाने के तरीके आजमाने होंगे।''[9] उन्होंने कहा– ''हमारी गरीबी का एक प्रमुख कारण स्वच्छता की अनिवार्य जानकारी का उपलब्ध न होना है। यदि गाँवों की साफ–सफाई में सुधार लाया जाय तो लाखो रूपये आसानी से बचाये जा सकेंगे।''

सबसे बड़ी बात है कि गाँधीजी सिर्फ बाहरी स्वच्छता यानि घर–दरवाजे, पास–पड़ोस आदि की स्वच्छता के ही पक्षघर नहीं थे बल्कि मन और अंतरात्मा की स्वच्छता के प्रबल पक्षघर थे। वे मानव प्रगति के लिये आंतरिक और बाहरी स्वच्छता को आवष्यक मानते थे। उन्होंने स्वच्छता को आत्मविष्वास और राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण अवयव माना। ''[10] एक पवित्र आत्मा के लिये एक स्वच्छ 'षरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि किसी स्थान, 'षहर, राज्य और देष के लिये स्वच्छ रहना जरूरी होता है। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। यदि वह स्वस्थ नही है तो वह स्वस्थ मनोदषा के साथ नहीं रह पायेगा। स्वस्थ मनोदषा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा। ऐसे लोग ही समाज और राष्ट्र को मजबूत बना सकते है।

3. **स्वस्थ भारत** –गाँधी देषवासी के अच्छे स्वास्थ के प्रति काफी संवेदनषील थे। बहुत कम लोग जानते है कि उन्हें चिकित्सा में गहरी रूचि है। उन्होंने कहा कि –'' स्वास्थ्य ही असली धन है, न कि सोने–चाँदी के टूकड़े।'' उनका दृढ़ विष्वास था कि अच्छा स्वास्थ्य किसी भी इंसान के लिये सबसे ज्यादा जरूरी है, क्योकि इसके बिना व्यक्ति का मन या आत्मा विकसीत नहीं हो सकता । मानसिक स्वास्थ्य को षारिरिक स्वास्थ्य के बराबर रखा गया है। गाँधीजी के एकादष व्रत में से तीन व्रत यानि षारिरिक श्रम, अस्वाद और ब्रह्मचर्य, व्यक्ति के स्वस्थ्य जीवन और जीवन षैली पर सीधा असर डालते हैं।

गाँधीजी ने सड़क पर थूकना, तंबाकु–षराब –नषीली दवा का सेवन करना, खुले में षौच जाना, घर के आसपास और सड़क पर गंदगी फैलाना, नदी –पोखर के जल को गंदा करने को, स्वास्थ्य के लिये हानिकारक माना। उनके अनुसार–''स्वच्छता और अच्छी आदतों का अच्छे स्वास्थ्य के साथ धनिष्ठ सबंध है।''[11]

4. **सशक्त नारी** –महात्मा गाँधी महिला सषक्तिकरण के प्रबल पक्षघर थे। उहोंने महिलाओं की अषिक्षा, विधवा विवाह और पर्दा प्रथा जैसे कुरीतियों को दूर करने के दिषा में काफी प्रयास किये। उन्होंने महिलाओं को उनके धरों से बाहर निकलकर समाज के मुख्यधारा में षामिल होने का अवसर उपलब्ध कराया। समाज में नारी की स्थिति के बारे में उन्होंने

कहा–'' आदमी जितनी बुराइयों के लिये जिम्मेवार है, उसमें सबसे ज्यादा बुराई, उसके द्वारा मानवता का आधा अंग अर्थात नारी जाति के प्रति किया जाता है। ''[12] इसलिये पुरूष को चाहिये कि स्त्री को उचित स्थान देना सीखे। '' जिस देष और समुदाय में स्त्री का आदर नहीं होता उसे सुसंस्कृत नहीं कहा जा सकता।''[13]

5. **सतत् कृषि और पर्यावरणीय संरक्षण**– महात्मा गाँधी मानव और प्रकृति के बीच सौहार्दपूर्ण सबंध में विष्वास करते थे। गाँधीजी ने सतत कृषि के लिये स्वदेषी और आत्मनिर्भरता का समर्थन किया । जिसमें जैविक खेती और कुटीर उद्योगों का उपयोग 'षामिल था। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और संरक्षण करने की आवष्यकता पर जोर दिया। गाँधीजी ने कृषि को एक व्यवसाय के रूप में नहीं बल्कि जीवन के एक तरीके के रूप में देखा था। उन्होंने ग्राम स्वराज्य यानि गाँवों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने की बात कही।

गाँधीजी ने पारिस्थितिकीय तंत्रों को संरक्षित करने, जैविक और पर्यावरण हितैषी वस्तुओं के संतुलित उपयोग पर बल दिया। पृथ्वी, वायु भूमि और जल हमारे पूर्वजों की, संपत्ति ही नहीं, बल्कि हमारे बच्चों की धरोहर है। अतः गांधीजी पर्यावरण के प्रति काफी संवेदनषील थे।

6. **स्वराज्य** – स्वराज्य एक पवित्र षब्द है, वैदिक षब्द है जिसका अर्थ है–'' स्वषासन तथा आत्मनिग्रह।''[14] स्वराज्य, सरकार के नियंत्रण से मुक्त होने का सतत प्रयास है चाहे वह सरकार विदेषी हो या राष्ट्रीय।''[15]

गाँधीजी के स्वराज्य के मूल में ग्रामस्वराज्य यानि आत्मनिर्भर गाँव का एक श्रृंखला है। ग्रामस्वराज्य में स्वच्छता, स्वास्थ्य, आहार से लेकर उद्योग, परिवहन, कृषि आदि समस्त ऐसी बातों को शामिल किया गया है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा है। स्वराज्य का लक्ष्य आदर्ष गाँव के निर्माण के द्वारा सुराज की स्थापना है।

7. **सर्वधर्म समयाव** –गाँधीजी की धर्म में अडिग आस्था थी। वे इसे मानव जीवन और समाज का आधारभूत तत्व मानते थे। धर्म उनके समस्त कार्य के मूल में था। गाँधीजी का धर्म से आषय 'सर्वधर्म समभाव' से था। उन्होंने कहा– ''सभी धर्मो के मार्ग भले ही अलग हो लेकिन उसका उद्देष्य एक ही है– सत्य, अहिंसा और परमसत्ता की खोज । इसलिये गाँधीजी ने सभी धर्मो के लिये समान सम्मान की बात कही और सर्वधर्म समभाव की भावना को बढ़ावा दिया।

8. **वसुधैव कुटुम्बकम्ब**– 'वसुधैव कुटुम्बकम्ब' का अर्थ है– ''धरती ही परिवार है।''यह एक व्यापक अवधारणा है। यह सिर्फ मानव से ही नहीं, बल्कि सभी जीव, जानवर, पेड़– पौधे सहित सपूर्ण प्राकृतिक दुनिया से भी सबंधित है। गाँधीजी इस धारणा को पुष्ट करते हुये जीवों की एकता और उसके विकास– कल्याण– उत्थान की बातें करते हैं।

उपसंहार– आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिये गांधीजी ने सत्य–अहिंसा का प्रसार, सर्वधर्म समभाव, सद्धर्म का विकास समग्र षिक्षा, सतत् कृषि, सषक्त नारी, सामाजिक न्याय की स्थापना, स्वराज्य, सर्वोदय, सर्वजन हिताय– सर्वजन सुखाय और वसुधैव कुटुम्बकम्ब की भावना को जरूरी बताया। उन्होंने कहा –'' मैं भारत को स्वतंत्र और सुदृढ़ देखना चाहता हूँ ताकि वह दुनिया के खुषहाली के लिये खुद को प्रस्तुत कर सके।''[16]

आज भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे अंत्योदय योजना, स्वच्छ भारत, आयुष्मान योजना–स्वस्थ भारत, महिला सुरक्षा आदि के मूल में गाँधीजी की विचार रही

है। आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिये जितने प्रयास किये जा रहे हैं, उन सबके मूल में गाँधीजी की दूरदृष्टि और जनकल्याण की भावना निहित है।

संदर्भ सूची –

1. हरिजन – 7–12–1947, पेज – 453
2. यंग इंडिया– 12–3–1925, पेज – 88
3. हरिजन – 18–1–1948, पेज – 526
4. यंग इंडिया– 12–3–1925, पेज – 88
5. यंग इंडिया– 21–02–1925, पेज– 60
6. यंग इंडिया– 3–4–1934, पेज– 109
7. हरिजन – 17–11–1946, पेज – 404
8. यंग इंडिया– 7–10–1927, पेज–348
9. हरिजन – 10–1–1924 , पेज –4
10. यंग इंडिया – 10–12– 1925
11. नवजीवन – 2–11–1919
12. यंग इंडिया – 15–9–1921, पंज –292
13. हरिजन – 11–1–1948, पंज– 508
14. यंग इंडिया – 19–3–1931, पेज – 38
15. यंग इंडिया – 6–8–1925, पेज –276
16. यंग इंडिया – 17–9–1925, पेज– 321